सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

शिक्षाशास्त्री–परीक्षा–निर्देशिका

प्रवेश :—

१–प्रवेशपरीक्षा में प्राप्त योग्यता के आधार पर प्रवेश लिया जायेगा। प्रवेशपरीक्षा के संबंध में विश्वविद्यालय द्वारा लिया गया निर्णय मान्य होगा।

२–शिक्षाशास्त्री में प्रवेश के लिए निम्नलिखित अर्हता होनी चाहिए :—

(क) सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की स्नातक परीक्षोत्तीर्ण होना चाहिए।

अथवा

(ख) इस विश्वविद्यालय द्वारा इस प्रयोजन के लिए मान्य किसी अन्य विश्वविद्यालय की स्नातक उपाधि।

एवं

(ग) स्नातक परीक्षा में एक विषय संस्कृत होना चाहिए।

(घ) स्नातक परीक्षा में प्रवेश हेतु अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के अभ्यर्थियों के अतिरिक्त अभ्यर्थियों को ५० प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है।

(ङ) शासन द्वारा किये जाने वाले संसोधन भी आवश्यक होंगे।

३–शिक्षाक्षाशास्त्री परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए निम्नलिखित अर्हता अनिवार्य है :—

(क) इस विश्वविद्यालय एवं इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालय में एक शैक्षणिक सत्र तक शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम का नियमित रूप से अध्ययन किया हो।

(ख) कक्षादि व्याख्यानों में जिसने ७५ प्रतिशत उपस्थिति अर्जित की हो।

(ग) शैक्षणिक सत्र में समय से शुल्क का भुगतान किया हो एवं उसका आचरण उत्तम हो।

(घ) प्रशिक्षण की अवधि में जिसने विश्वविद्यालय अथवा सम्बद्ध महाविद्यालय में शिक्षा विभाग के किसी आचार्य, उपाचार्य या प्राध्यापक के निर्देशन में किसी मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालय में कम से कम ५० पाठों का वास्तविक शिक्षण अभ्यास किया हो, एवं समस्त अनिवार्य सत्रीय कार्यों को विधिवत् पूरा किया हो, वह शिक्षाशास्त्री उपाधि के निमित्त परीक्षा में बैठ सकता है।

प्रत्येक अभ्यर्थी को सैद्धान्तिक, प्रयोगात्मक एवं सत्रीय कार्य में भाग लेना अनिवार्य होगा। सैद्धान्तिक पक्षों पर आयोजित व्याख्यानों में ७५ प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य है, जिसकी अधिसूचना विभागाध्यक्ष विभाग की सुविधानुसार हर माह निर्गत कर सकता है।

(ङ) लगातार बिना लिखित सूचना के १५ दिन तक अनुपस्थित रहने की दशा में अभ्यर्थी का प्रवेश निरस्त समझा जायेगा।

(च) शिक्षाशास्त्री के अध्ययन काल में प्रशिक्षार्थी कोई भी पूर्णकालिक या अंशकालिक कार्य जिसमें वेतन मिलने की सुविधा हो, स्वीकार नहीं कर सकता। इस प्रकार की सूचना मिलते ही किसी भी प्रशिक्षार्थी का प्रवेश निरस्त किया जा सकता है।

३-(ख) [१] जिसने कक्षीय व्याख्यानों में ७५ प्रतिशत उपस्थिति अर्जित नहीं किया है वह शिक्षाशास्त्री की सम्पूर्ण परीक्षा से बहिष्कृत कर दिया जायेगा।

[२] यदि भविष्य में वह अभ्यर्थी ३ मास तक शुल्क देकर आकस्मिक छात्र के रूप में शिक्षाशास्त्री की कक्षा में उपस्थित रहता है और पुनः ५० पाठों का वास्तविक कक्षा शिक्षण अभ्यास तथा अन्य निर्धारित सत्रीय एवं अन्य कार्यों को पूरा करता है तो वह परीक्षा जिससे वह बहिष्कृत किया गया था, दो वर्षों के भीतर परवर्ती परीक्षा में बैठने की अनुमति उसे विभागाध्यक्ष की संस्तुति पर कुलपति से प्राप्त हो सकती है।

शिक्षाशास्त्री परीक्षायोजना :—

१–कोई भी प्रशिक्षार्थी हिन्दी या संस्कृत में प्रश्नों का उत्तर दे सकता है।

२–शिक्षाशास्त्री कक्षा में सैद्धान्तिक तथा प्रयोगात्मक दोनों प्रकार की परीक्षाओं के लिए अलग-अलग श्रेणियाँ दी जायेंगी। प्रथम श्रेणी ६० प्रतिशत या उससे अधिक, द्वितीय श्रेणी ४८ प्रतिशत या अधिक किन्तु ६० प्रतिशत से कम तथा शेष सभी छात्र तृतीय श्रेणी प्राप्त करेंगे, यदि वे न्यूनतम ३६ प्रतिशत सम्पूर्णाङ्क में तथा ३३ प्रतिशत प्रत्येक प्रश्नपत्र में अंक प्राप्त करते हैं।

३–प्रायोगिक परीक्षा में प्रथम श्रेणी ६० प्रतिशत या उससे अधिक और द्वितीय श्रेणी ४८ प्रतिशत या उससे अधिक किन्तु ६० प्रतिशत से कम और तृतीय श्रेणी ४० प्रतिशत या उससे अधिक किन्तु ४८ प्रतिशत से कम प्राप्ताङ्क पर दी जायेगी।

शिक्षाशास्त्री (बी० एड०) सत्र २००२—२००३ से प्रवृत पाठ्यक्रम

शिक्षाशास्त्री परीक्षा हेतु निम्नलिखित पाठ्यक्रम नियत है :—

(क) सैद्धान्तिक परीक्षा	६००
प्रथम प्रश्नपत्र—शिक्षा-दर्शन एवं नव्य प्रवृत्तियाँ।	१००
द्वितीय प्रश्नपत्र—शिक्षा मनोविज्ञान।	१००
तृतीय प्रश्नपत्र—भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं शिक्षा की वर्तमान समस्यायें।	१००
चतुर्थ प्रश्नपत्र—विद्यालय प्रशासन एवं जनसंख्या तथा पर्यावरण शिक्षा।	१००
पंचम प्रश्नपत्र—शिक्षण प्राविधिकी।	१००
षष्ठ प्रश्नपत्र—अनिवार्य संस्कृत एवं अन्य विषयों की शिक्षण विधियाँ।	१००

(ख) शिक्षण अभ्यास एवं सत्रीय कार्य —

दो विद्यालयीय विषयों के ५० पाठों का वास्तविक शिक्षण अभ्यास प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को करना होगा। इनमें १० पाठ सूक्ष्म शिक्षण के माध्यम से पूरे करने होंगे।

एक विषय में कम से कम १५ पाठ पढ़ाना अनिवार्य होगा।

१—बाह्य पाठनाभ्यास परीक्षा —	२००
२—पाठ सहगामिनी क्रिया—	
(क) स्काउटिंग या प्राथमिक चिकित्साज्ञान—	१०
(ख) आन्तरिक मूल्यांकन—	१०
(ग) शिक्षण सहायक सामग्री निर्माण—	१०
(घ) संस्कृत वक्तृता (भाषण, अन्त्याक्षरी, लिखित कार्य)—	१०
(ङ) शैक्षिक भ्रमण-अनुशासन पालन—	१०
सम्पूर्ण योग—	२५०

प्रायोगिक परीक्षा लेने के लिए परीक्षकों की एक परिषद् होगी जिसमें दो बाह्य सदस्य होंगे। विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महाविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग के अध्यक्ष आन्तरिक परीक्षक के साथ-साथ इस परिषद के संयोजक का कार्य करेंगे।

सत्रीय कार्यों का मूल्यांकन विभागीय समिति द्वारा किया जायेगा, जिसके संयोजक विभागाध्यक्ष होंगे। विभागाध्यक्ष सत्रीय कार्यों के मूल्यांकन द्वारा प्रदत्त अंकपत्र को कुलसचिव (परीक्षा) को भेजेंगे।

शिक्षा शास्त्री (बी० एड०)

प्रथम पत्र

"शिक्षा दर्शन एवं नव्य प्रवृत्तियाँ"

"खण्ड क"

६० अंक

१—शिक्षा का तात्पर्य, कार्य तथा उद्देश्य।

२—शिक्षा के अभिकरण (औपचारिक, अनौपचारिक, निरौपचारिक) स्वरूप, उद्देश्य, समस्यायें।

३—दर्शन, अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र।

४ - शिक्षा और दर्शन का सम्बन्ध।

५ – शिक्षा के दार्शनिक आधार-आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, प्रयोजनवाद, मानवतावाद।

६—शिक्षा में मूल्य, मूल्य का अर्थ, मूल्य-सम्बन्धी अवधारणा, मूल्योन्मुख शिक्षा।

७—भारतीय तथा पाश्चात्य दार्शनिक– रूसो, फ्रोबेल, महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द।

"खण्ड ख"

४० अंक

८—सामाजीकरण का तात्पर्य, सामाजीकरण के घटक, बालक के सामाजीकरण में विद्यालय और परिवार की भूमिका।

९—लोकतंत्र और शिक्षा, शिक्षा और राज्य सम्बन्ध।

१०—भारतीय समाज में राष्ट्रीय तथा भावनात्मक एकता एवं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए शिक्षा।

११ - सामाजिक परिवर्तन तथा सामाजिक समायोजन के साधन के रूप में शिक्षा।

द्वितीय पत्र

शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांखिकी

"खण्ड क" **६० अंक**

१–शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ, क्षेत्र, अध्ययन की विधियाँ, शिक्षा और मनोविज्ञान का सम्बन्ध, अध्यापक के लिए शिक्षा मनोविज्ञान का महत्व।

२–मानव विकास, विकास का अर्थ, विकास की अवस्थायें, (शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था) विभिन्न अवस्थाओं में विकास का स्वरूप, विकास के पक्ष-शारीरिक, मानसिक, नैतिक, संवेगात्मक, विकास को प्रभावित करने वाले कारक।

३–अधिगम-अर्थ, नियम, प्रकार, विधियाँ। अधिगम के सिद्धान्त-उत्तेजना-प्रतिक्रिया अनुकूलित-अनुक्रिया, अन्तंदृष्टि सूझ का सिद्धान्त, अधिगम का स्थानान्तरण, अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक।

४–अभिप्रेरणा-तात्पर्य, आवश्यकता, बालकों को अभिप्रेरित करने वाले प्रमुख तत्व, अधिगम में अभिप्रेरणा का स्थान। अभिप्रेरण तकनीकियां।

५–व्यक्तित्व-तात्पर्य, प्रकार, व्यक्तित्व निर्माण के प्रमुख घटक, व्यक्तित्व परीक्षण, व्यक्तित्व विकास में वंशानुक्रम तथा वातावरण की भूमिका।

६–वैयक्तिक भिन्नता-अर्थ, कारण, वैयक्तिक भिन्नता एवं शिक्षा।

७–विशिष्ट बालक-अर्थ, प्रकार, पहचान, प्रतिभाशाली, पिछड़े एवं समस्यात्मक बालकों की विशेषतायें तथा उनकी शिक्षा की व्यवस्था।

८–बुद्धि–बुद्धि की प्रकृति, बुद्धि के सिद्धान्त–एकतत्व का सिद्धान्त, द्वितत्व का सिद्धान्त, बहुतत्व का सिद्धान्त, बुद्धि परीक्षण एवं उनकी उपयोगिता।

"खण्ड ख" **१० अंक**

प्रायोगिक मनोविज्ञान–

१–अधिगम-दर्पण चित्रांकन परीक्षण

२–अवधान विस्तार

३–स्मृति–तात्कालिक, स्थायी

४–साहचर्य (अ) स्वतंत्र प्रत्यय सम्बन्ध (I) शब्दावली प्रणाली (II) निरंतर प्रणाली

(ब) बद्ध प्रत्यय सम्बन्ध

५–सामूहिक बुद्धि परीक्षण–(I) मौखिक (II) मौखिक के अतिरिक्त

"खण्ड ग" **३० अंक**

प्रारम्भिक सांख्यकी–

१–केन्द्रीय प्रवृत्ति के मान–मध्यमान, माध्यिका मान, बहुलांक।

२–विचलन मापन विस्तार–मध्यमान विचलन, चतुर्थांश विचलन, प्रामाणिक विचलन।

३–सह सम्बन्ध अन्तर क्रम विधि।

४–प्रदत्त लेखा चित्रीय प्रदर्शन।

तृतीय पत्र

भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ—

"खण्ड क"

६० अंक

१—प्राचीन भारतीय शिक्षा का स्वरूप, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि एवं प्रमुख शिक्षण केन्द्र (वैदिक काल से बौद्ध काल तक)

२—मध्यकालीन शिक्षा

३—वर्तमान शिक्षा—मैकाले की शिक्षा योजना १८३३, वुड का प्रतिवेदन १८५४

४—मुदालियर आयोग

५—कोठारी आयोग

६—संस्कृत आयोग

७—राष्ट्रीय शिक्षा नीति (नई शिक्षा नीति १९८६)

"खण्ड ख"

४० अंक

१—छात्र असंतोष-कारण एवं निवारण

२—नारी शिक्षा

३—दूरवर्ती शिक्षा

४—प्रौढ शिक्षा

५—प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा

चतुर्थ पत्र

"विद्यालय प्रशासन एवं जनसंख्या तथा पर्यावरण शिक्षा"

"खण्ड क"

६० अंक

१ – विद्यालय प्रशासन—अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र, उद्देश्य, विद्यालय प्रशासन के निर्देशक सिद्धान्त ।

२—विद्यालय भवन तथा उपकरण–कक्षा-कक्ष, प्रयोगशाला, छात्रावास, क्रीडा प्रांगण एवं अन्य, भवन/कक्ष/विद्यालय भवन निर्माण के सिद्धान्त ।

३—पुस्तकालय एवं संग्रहालय–उपयोगिता, कार्य एवं संघटन ।

४—छात्रावास–छात्रावास व्यवस्था, छात्रावास संरक्षक के कर्तव्य, छात्रावास का पारिवारिक जीवन ।

५—प्रधानाध्यापक —कर्त्तव्य एवं उत्तरदायित्व ।

६—समय-सारिणी—महत्व, प्रकार, निर्माण के सिद्धान्त ।

७—पाठ्य सहगामी क्रिया कलाप —महत्व, आयोजन में ध्यान देने योग्य बातें, बालचर संघ, शैक्षिक भ्रमण, वाद-विवाद गोष्ठी, विद्यालय के उत्सव, क्रीडा, व्यायाम, युवक समारोह आदि ।

८—अध्यापक-अभिभावक सम्बन्ध ।

९—विद्यालय अभिलेख —उपयोगिता, प्रकार तथा इनका रख-रखाव ।

"खण्ड ख"

४० अंक

जनसंख्या एवं पर्यावरण शिक्षा—

१—जनसंख्या शिक्षा का अर्थ, आवश्यकता, उद्देश्य एवं महत्व ।

२—स्वतन्त्र भारत में जनसंख्या विस्तार एवं नियंत्रण के आंकड़ों का तुलनात्मक अध्ययन ।

३—जनसंख्या विस्तार का जीवन स्तर पर प्रभाव—पोषण, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार के संदर्भ में ।

४—विभिन्न स्तर के पाठ्यक्रमों में जनसंख्या शिक्षा का स्थान, अन्य विद्यालयीय विषयों के साथ सह सम्बन्ध ।

५—जनसंख्या-शिक्षण में शिक्षक एवं जन संचार के साधनों की भूमिका ।

६—पर्यावरण शिक्षा-संप्रत्यय, आवश्यकता एवं महत्व ।

७—पर्यावरण प्रदूषण के विविध रूप एवं उनका प्रभाव ।

८—प्रदूषण निवारण में औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा साधनों की भूमिका ।

पंचम प्रश्न-पत्र

१—शिक्षण प्राविधिकी—अर्थ, विषयवस्तु तथा उपयोगिता

शैक्षिक तकनीकि—अर्थ एवं स्वरूप

शैक्षिक तकनीकि के रूप—कठोर शिल्प उपागम

कोमल शिल्प उपागम

प्रणाली विश्लेषण

शैक्षिक तकनीकि का क्षेत्र एवं उपयोगिता

२—शैक्षिक तकनीकि के प्रकार—शिक्षण तकनीकि, अनुदेशन तकनीकि, व्यवहार तकनीकि

३—शिक्षण सम्प्रत्यय—अनुदेशन-प्रशिक्षण

शिक्षण, अनुदेशन एवं प्रशिक्षण में अन्तर

४—पाठ नियोजन—तात्पर्य, पाठ नियोजन के सिद्धान्त

प्रकार—हरबार्ट की पंचपदी, ईकाई विधि, ब्लूम की मूल्यांकन प्रणाली पर आधारित पाठ योजना, इन प्रकारों की विशेषताएँ एवं सीमाएँ।

५—शिक्षण सिद्धान्त, शिक्षण सूत्र एवं शिक्षण युक्तियाँ।

६—प्रमुख शिक्षण विधियाँ—किंडरगार्टेन, माण्टेसरी, प्रोजेक्ट, डाल्टन

७—सूक्ष्म शिक्षण—अर्थ, परिभाषा, इतिहास, महत्व, अवधारणाएँ, सिद्धान्त, चक्र, भारतीय प्रतिमान, शिक्षण कौशल एवं उनका समन्वयन, फ्लेण्डर की अन्तः क्रियात्मक प्रणाली।

८—मापन एवं मूल्यांकन

अर्थ, अवधारणा—प्रयोजन, मापन एवं मूल्यांकन में अन्तर, मूल्यांकन की प्रविधि, महत्व, गुण विश्वसनीयता, वैधता, वस्तुनिष्ठ परीक्षाएँ, प्रमापीकृत परीक्षणों का निर्माण

९—शिक्षण प्रतिमान—तात्पर्य, आवश्यक तत्व, महत्व, वर्गीकरण, प्रतिमान रचना का शिक्षा में महत्व

१०—कम्प्यूटर सहअनुदेशन :—

हार्डवेयर—अदा, प्रदा एवं सी० पी० यू०, स्मृति भण्डार

साफ्टवेयर—प्रकार, कम्प्यूटर सहअनुदेशन सामग्री की उपयोगिता।

सिद्धान्त, सिद्धान्त निर्माण के चरण

षष्ठ प्रश्न-पत्र

शिक्षण विषय

अनिवार्य संस्कृत

६० अंक

१—संस्कृत भाषा शिक्षण की आवश्यकता, महत्व, उद्देश्य, पाठ्यक्रम में स्थान

२—विभिन्न स्तर पर संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य

३– उच्चारण की शिक्षा—उच्चारण का महत्व, आरोहावरोह, बलाघात, उच्चारण दोषों का कारण एवं निवारण

४—लेखन शिक्षण—लेखन का महत्व, लेखन शिक्षण की विधियाँ, लिखना सिखाने में ध्यान देने योग्य बातें, अनुलेख, प्रतिलेख, श्रुतलेख।

५—वर्तनी की शिक्षा—वर्तनी दोष के कारण एवं निवारण

६—पाठ योजना निर्माण के सिद्धान्त एवं पद्धतियाँ—
गद्य शिक्षण, पद्य शिक्षण, व्याकरण शिक्षण, कहानी शिक्षण, नाटक शिक्षण एवं रचना शिक्षण।

७ संस्कृत शिक्षण में दृश्य-श्रव्य साधन।

८—मूल्यांकन की प्राचीन तथा नवीन विधियाँ

९—संस्कृत अध्यापक के गुण

१० नैतिक शिक्षा और संस्कृत

११- त्रिभाषा सूत्र में संस्कृत का स्थान

वैकल्पिक विषय

हिन्दी—

४० अंक

१ हिन्दी—शिक्षण का उद्देश्य एवं महत्त्व, पाठ्यक्रम में हिन्दी का स्थान ।

२—वाचन—वाचन क प्रकार, मौन पाठ, सस्वर पाठ एवं आदर्श पाठ, शुद्ध उच्चारण की विधि ।

३—लेखन—लेखन के प्रकार, लेखन का महत्व, लेखन शिक्षा ।

४—वर्तनी की शिक्षा-महत्व, वर्तनी दोष के कारण, निवारण ।

५—गद्य शिक्षण—शिक्षण के सामान्य उद्देश्य, विधि, द्रुतपाठ ।

६—पद्य शिक्षण—उद्देश्य एवं शिक्षण की विधियाँ, सौन्दर्यानुभूति के साधन, कविता में रुचि उत्पन्न करने के उपाय ।

७—व्याकरण, नाटक एवं रचना—शिक्षण के उद्देश्य, विधियाँ एवं उपयोगिता ।

८—मातृ-भाषा का अन्य विषयों से सह-सम्बन्ध एवं मातृ-भाषा-शिक्षण में सहायक सामग्री ।

९—पाठ-संकेत-निर्माण एवं हिन्दी अध्यापक के गुण ।

१०—हिन्दी में मूल्यांकन ।

गणित—

४० अंक

१—गणित की प्रकृति एवं क्षेत्र तथा अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित तथा सांख्यिकी का प्रत्यय ।

२—गणित-शिक्षण के उद्देश्य—अंकगणित, बीजगणित एवं सांख्यिकी शिक्षण के उद्देश्य ।

३—प्राथमिक, जूनियर हाईस्कूल एवं माध्यमिक विद्यालयीय स्तर के पाठ्यक्रमों में गणित का स्थान तथा महत्व, इन स्तरों पर गणित के पाठ्यक्रमों की समीक्षा ।

४—गणित की शिक्षण विधियाँ—आगमन एवं निगमन, विश्लेषण एवं संश्लेषण, व्याख्यान, ह्यूरिस्टिक, प्रयोगशाला, समस्या एवं योजना विधियाँ अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित एवं सांख्यिकी शिक्षण की विधियाँ ।

५—गणित का अन्य विद्यालयीय विषयों से सह-सम्बन्ध ।

६ गणित शिक्षण में मौखिक एवं लिखित कार्य, गणित में गति एवं शुद्धता प्राप्त करने के साधन, गृहकार्य का संशोधन ।

७—गणित शिक्षण में श्रव्य-दृश्य सामग्रियाँ ।

८—पाठ संकेत निर्माण एवं अच्छे गणित शिक्षण के गुण ।

९—गणित-मूल्यांकन ।

इतिहास—

४० अंक

१—भारतवर्ष तथा विदेशों में इतिहास का उद्भव एवं विकास तथा आधुनिक विचारधारा।

२—इतिहास शिक्षण के उद्देश्य तथा शिक्षा में इतिहास की उपादेयता।

३—इतिहास का पाठ्यक्रम (विभिन्न स्तरों पर)।

४—इतिहास के अध्ययन की विधियाँ—पाठ्यपुस्तक विधि, कहानी एवं वर्णन विधि, समस्या विधि, योजना विधि तथा श्रोत विधि।

५—पुनिरीक्षित अध्ययन का महत्त्व, विचार] विमर्श, प्रतियोगिता, अभिनय तथा शैक्षिक भ्रमण की इतिहास शिक्षण में उपयोगिता, इतिहास शिक्षण द्वारा अतीत को वास्तविक बनाने की विधि, पाठ सूत्र निर्माण (हरबार्ट पंचपदीय तथा सूक्ष्म शिक्षण पद्धतियाँ)।

६—इतिहास का अन्य विद्यालयीय विषयों से सह-सम्बन्ध।

७—इतिहास शिक्षण में श्रव्य-दृश्य सहायक सामग्रियाँ एवं इतिहास कक्ष।

८—मूल्यांकन।

भूगोल—

४० अंक

१—भूगोल की प्रकृति, क्षेत्र एवं स्थानीय भूगोल।

२—भूगोल शिक्षण के उद्देश्य।

३—विद्यालय के विभिन्न स्तरों पर भूगोल का पाठ्यक्रम एवं भूगोल की उपयोगिता।

४—भूगोल शिक्षण पद्धति—पाठ्यपुस्तक, कथा, श्रोत, प्रत्यक्ष निरीक्षण, प्रयोगशाला, क्षेत्रीय, योजना एवं गोष्ठी, शैक्षिक भ्रमण।

५—भूगोल का अन्य विद्यालयीय विषयों से सह-सम्बन्ध।

६—भूगोल में श्रव्य-दृश्य सहायक सामग्री तथा भूगोल कक्ष।

७—भूगोल शिक्षण में पाठ संकेत योजना का निर्माण (हरबार्ट पंचपदीय एवं सूक्ष्म शिक्षण पद्धतियाँ)।

८—भूगोल शिक्षण में मूल्यांकन।

सामान्य विज्ञान—

४० अंक

१—सामान्य विज्ञान की प्रकृति एवं क्षेत्र।

२—सामान्य विज्ञान का उद्देश्य।

३—पाठ्यक्रम में विज्ञान का स्थान, विभिन्न विद्यालयीय स्तरों पर सामान्य विज्ञान के पाठ्यक्रमों का आलोचनात्मक विवरण।

४—विज्ञान शिक्षण की विधियाँ—प्रदर्शन, ह्यूरिस्टिक, कान्सेन्ट्रिक, प्रयोगशाला एवं योजना विधियाँ, पाठ संकेत निर्माण।

५—विज्ञान कक्ष, प्रयोगशाला एवं विज्ञान शिक्षण में श्रव्य-दृश्य सामग्री।

६—विज्ञान का अन्य विद्यालयीय विषयों से सह-सम्बन्ध ।
७—विज्ञान की पाठ्यपुस्तक, वर्तमान पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक विवरण ।
८—विज्ञान में मूल्यांकन—परम्परागत एवं वस्तुनिष्ठ परीक्षण ।

कला—

४० अंक

१—कला की प्रकृति एवं क्षेत्र ।
२—कला शिक्षण के उद्देश्य ।
३—प्राथमिक, जू० हा० स्कूल तथा हाईस्कूल के पाठ्यक्रम में कला का स्थान, विभिन्न स्तरों पर वर्तमान कला के पाठ्यक्रमों का विवेचन ।
४—कला शिक्षण की विधियाँ, डिजाईनिंग तथा वके मार्बलिंग, कला में स्वतन्त्र वर्णन ।
५—कला का अन्य विद्यालयीय विषयों से सह-सम्बन्ध ।
६—कला कक्ष, इसकी आवश्यकता एवं साज-सज्जा, कला शिक्षण में श्रव्य-दृश्य सामग्री ।
७—पाठ संकेत निर्माण सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक) ।
८—कला में मूल्यांकन ।

गृहविज्ञान—

४० अंक

१—गृह विज्ञान का अर्थ एवं क्षेत्र ।
२—गृह विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य ।
३—विद्यालय की विभिन्न कक्षाओं के लिए गृह विज्ञान का पाठ्यक्रम ।
४—गृह विज्ञान के शिक्षण की विधियाँ—विचार विमर्श विधि, प्रयोगशाला विधि, प्रदर्शन विधि, प्रोजेक्ट विधि, समस्या-समाधान विधि ।
५—गृह विज्ञान शिक्षण में मूल्यांकन ।
६—गृह विज्ञान शिक्षण में श्रव्य-दृश्य सहायक सामग्रियों का उपयोग ।
७—गृह विज्ञान कक्ष एवं प्रयोगशाला ।
८—गृह विज्ञान का अन्य विद्यालयीय विषयों से सह-सम्बन्ध ।
९—(क) प्राथमिक चिकित्सा ।
(ख) फल एवं शाक संरक्षण ।
(ग) भोजन बनाने की विभिन्न विधियाँ ।
(घ) सिलाई-कढ़ाई ।

अर्थशास्त्र—

४० अंक

१—अर्थशास्त्र शिक्षण की उपयोगिता एवं क्षेत्र ।
२—अर्थशास्त्र का महत्व एवं पाठ्यक्रम में इसका स्थान ।
३—अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य ।
४—अर्थशास्त्र शिक्षण की विधियाँ—वर्णन, तुलना, प्रोजेक्ट, पाठ्यपुस्तक, सर्वेक्षण एवं समस्या-समाधान विधि ।

५–अर्थशास्त्र का अन्य विद्यालयीय विषयो से सह-सम्बन्ध ।

६–अर्थशास्त्र शिक्षण में सहायक सामग्री–चार्ट, रेडियो, फिल्म, मानचित्र, वीडियो एवं समाचार पत्र ।

७–अर्थशास्त्र शिक्षण में भ्रमण का महत्त्व ।

८–अर्थशास्त्र शिक्षण के मूल्यांकन की विधियाँ–निबन्धात्मक विधि, वस्तुनिष्ठ विधि एवं प्रयोगात्मक विधि ।

नागरिकशास्त्र–

१–नागरिकशास्त्र की प्रकृति, क्षेत्र एवं उपयोगिता ।

२–नागरिकशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य एवं अन्य विद्यालयीय विषयों से सह-सम्बन्ध ।

३–विद्यालयों में नागरिकशास्त्र के ज्ञान का महत्त्व एवं विभिन्न स्तरों पर नागरिकशास्त्र का पाठ्यक्रम ।

४–नागरिकशास्त्र शिक्षण की विधियाँ, समस्या समाधान, योजना, निरीक्षण, व्याख्यान तथा क्रियाशीलता ।

५–विचार विमर्श, अभिनय, सामुदायिक सर्वेक्षण एवं भ्रमण तथा अनुकरण क्रियाओं का नागरिकशास्त्र शिक्षण में महत्व ।

६–पाठ संकेत निर्माण–हरबार्ट पंचपदी एवं सूक्ष्म शिक्षण पद्धतियाँ ।

७–नागरिकशास्त्र शिक्षण में श्रव्य-दृश्य सामग्रियाँ ।

८–नागरिकशास्त्र में मूल्यांकन (निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ परीक्षण) ।

अंग्रेजी–

1. It's nature, Phonology Marphology and syntax.
2. The importance of English in India and its place in the curriculum of Junior High School and Secondary School. A critical analysis of the existing syllabi of English and suggestion for improvement.
3. Aims and objectives of teaching English in India.
4. Aims and methods of teaching prose, poetry, rapid reader, composition/grammar and translation structural approach, teaching methods of reading, Writing and speaking English Language.
5. Lesson planning, Herburtion approach, micro-teaching.
6. Audio-Visual aids to be used in the teaching of English.
7. Evaluation in English.
8. Quality of good English teacher.

पुस्तक सूची–शिक्षाशास्त्री

प्रथम प्रश्न-पत्र

१. सीताराम जायसवाल–शैक्षिक समाजशास्त्र ।
२. सुबोध अदावल तथा कन्हैयालाल जायसवाल–शिक्षा के सिद्धान्त ।
३. एल० के० ओड़–शिक्षा की दर्शनिक पृष्ठभूमि ।
४. रमनबिहारी लाल–शिक्षा के दर्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धान्त ।
५. डा० भास्कर मिश्र–शिक्षा एवं संस्कृति नये सन्दर्भ ।
६. शालिग्राम त्रिपाठी–शिक्षा सिद्धान्त ।
७. प्रो० के० पी० पाण्डेय–नवीन शिक्षा दर्शन ।
८. रामशकल पाण्डेय–शिक्षा दर्शन ।
9. Yogendra Singh—Moderrization of Indian Traditions.
10. Srinivas, M. N.—Social Change in India.
11. Alteker—Ancient Indian Education.
12. Humaun Kabir—Indian Heritage.
13. J. S. Ross—Ground Work of Educational Theory.
14. R. R. Rusk—Philosophical Basis of Education.
15. J. S. Brubacher—Modern Philosophies of Education.

द्वितीय प्रश्नपत्र

१. एस० एस० माथुर–शिक्षा मनोविज्ञान ।
२. सीताराम जायसवाल–शिक्षा मनोविज्ञान ।
३. सरयू प्रसाद चौबे–शिक्षा मनोविज्ञान ।
४. मालती सारस्वत–शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा ।
५. डा० राजेश्वर उपाध्याय–शिक्षाशास्त्र एवं मनोविज्ञान, सांख्यिकी ।
6. N. K. Dutta—Psychological Foundation.
7. Gates and Others—Educational Psychology.
8. E. A. Peel—Psychological Basis of Education.
9. S. S. Chauhan—Advanced Educational Psychology.
10. S. Bhatanagar—Educational Psychology.
11. Anderson and Gerald—Educational Psychology. The Science of Instuction and Learning.
12. M. C. Morse and M. Wingo—Psychology and teaching.
13. H.E. Carret—Statistics in Educational Psychology.

तृतीय प्रश्नपत्र

१. सीताराम जायसवाल–भारतीय शिक्षा का विकास और समस्यायें ।
२. सरयूप्रसाद चौबे–भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्यायें ।
३. के० पी० रस्तोगी–भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें ।
४. एस० एम० श्रीवास्तव–सतत् शिक्षा ।
5. Alteker—Ancient Indian Education.
6. Nurullah and Naik—History of Education in India.
7. P. L. Rawat—History of Education in India.
8. J. C. Agrawal—Progress of Education in Free India.
9. R. K. Mukherjee—Anciont Indian Education.
10. Reports of :—
(a) University Education Commission, 1948.
(b) Secondary Education Commission, 1953.
(c) Indian Education Commission, 1966.
(d) New Education Policy, 1986.

विद्यालय प्रशासन

१. सुखिया, एच० पी०–विद्यालय प्रशासन एवं संगठन ।
२. माथुर, एस० एस०—विद्यालय संगठन ।
३. मिश्र, भास्कर—विद्यालय प्रशासन ।
4. Bhatnagar, R. P. & B. Verma—Eductional Administration.
5. Sofaya, R. N.—School Administration and Organisation.
6. Agsrawal, J. C.—School Administration.
7. Shukla, P. C.—Administration of Education in India.

चतुर्थ प्रश्नपत्र

जनसंख्या एवं पर्यावरण शिक्षा

1. Bhan, R. K. Population Education–A Programme for School Education.
2. Mehra, T. S.—Population Education in School Curricula.
3. Population, Education for Teachers, NCERT, 1974.
4. Thompson, W. S—Population Problem.
५. एस० एस० श्रीवास्तव—सतत् शिक्षा ।
६. दुबे, पुष्पा—जनसंख्या शिक्षण ।
७. सेन्या के० सी०—जनसंख्या शिक्षण ।
८. भोपाल सिंह—पर्यावरणीय शिक्षा एवं पर्यावरण संरक्षण ।
९. भोपाल सिंह—जनसंख्या शिक्षा परिचय ।

पंचम प्रश्नपत्र

१. प्रो० सुभाष चन्द्र तिवारी—प्राचीन तथा नवीन शिक्षा विधियाँ।
२. प्रो० के० पी० पाण्डेय—शिक्षण व्यवहार की तकनोलोजी।
३. आर० ए० शर्मा—शिक्षण तकनीकी।
४. आत्मानन्द मिश्र—नव्य शिक्षण कला।
५. एस० एस० श्रीवास्तव—शिक्षण तकनीकी।
६. एस० एस० श्रीवास्तव टी० सिंह तथा कमला राय—सूक्ष्म शिक्षण।
७. सुबोध नारायण तिवारी—शिक्षण एवं अधिगम का मनोविज्ञान।
8. A. R. Sharma—Educational Technology.
9. Anderson and Gerald—Educational Psychology : The Science of Instruction and Learning.

षष्ठ प्रश्नपत्र

१. पाण्डेय, रामशकल-संस्कृत शिक्षण।
२. चौबे, विजयनारायण-संस्कृत शिक्षण।
३. गुप्त, मनोरमा-भाषा शिक्षण, सिद्धान्त एवं प्रविधि।
४. चांफे, बी० एन०-संस्कृत शिक्षण विधि।
५. सफाया, रघुनाथ-संस्कृत शिक्षण विधि।
६. चतुर्वेदी, सीताराम-संस्कृत शिक्षण पद्धति।
७. द्विवेदी, वाचस्पति-संस्कृत शिक्षण विधि।
८. कुशवाहा, के० एस०-संस्कृत शिक्षण।
९. चौबे, विजयनारायण-संस्कृत शिक्षण विधि।
१०. पाण्डेय, इन्दिरा चरण-संस्कृत शिक्षण समीक्षा।
११. पाण्डेय, अलख निरञ्जन-संस्कृताध्यापन विमर्श।
१२. प्रो० राजेश्वर उपाध्याय-संस्कृत एवं सूक्ष्म शिक्षण प्राविधिकी।
१३. दूबे, मीरा-संस्कृत शिक्षण।
14. Apte, D. G.—The Teaching Sanskrit.
15. Chakrawarte, P. C.—Philosophy of Sanskrit Grammer.
16. Sanskrit Commission Report 1931—Government of India.
17. Dongne, P. K.—Teaching of Sanskrit in Secondary School.

इतिहास शिक्षण

१. गुरुसरन त्यागी-इतिहास शिक्षण।
2. Hill—Suggestions for the Teaching of History.

3. Ghate—Suggestions for Teaching of History in India.
4. Keatings—The Teaching of History.
5. P. N. Pandey—Teaching of History.

भूगोल शिक्षण

१. डा० आत्मानन्द मिश्र–भूगोल शिक्षण पद्धति ।
२. गुरुप्रसाद टण्डन–भूगोल शिक्षण कला ।
३. एच० एन० सिंह–भूगोल शिक्षण ।
4. O. P. Verma—Geography Teaching.

नागरिकशास्त्र शिक्षण

१. गुरुसरनदास त्यागी–नागरिकशास्त्र का शिक्षण ।
2. S. K. Kochhar—The Teaching of Social Studies.
3. V. R. Taneja—Teaching of Social Studies.
4. Ralph C. Preston—Teaching Social Studies in the Elementary School.
5. C. D. Samford—Social Studies in th Secondary School.

कला शिक्षण

1. Margeret E. Maltias—Teaching of Arts.
2. G. M. Larpe—The Teaching of Colour of esign to your Children.
3. Robertson—Creative Craft in Education.

हिन्दी शिक्षण

१. रमनबिहारी लाल—हिन्दी शिक्षण ।
२. रघुनाथ सफाया—हिन्दी शिक्षण विधि ।
३. सीताराम चतुर्वेदी—भाषा की शिक्षा ।
४. मनोरमा गुप्ता—भाषा शिक्षण सिद्धान्त और प्रविधि ।
५, रामचन्द्र वर्मा—हिन्दी प्रयोग ।
६. रामसकल पाण्डेय—हिन्दी शिक्षण ।
७. मीरा दूबे—हिन्दी शिक्षण ।

गृह विज्ञान शिक्षण

१. जी० पी० शेरी—गृह विज्ञान शिक्षण ।
२. सुमनलता—गृहविज्ञान शिक्षण ।
३, देवकर—स्कीम आफ होम साइंस टीचिंग ।

अर्थशास्त्र शिक्षण

१. त्यागी, गुरुशरण दास—अर्थशास्त्र विभाग ।

२. सिंह, रामपाल —अर्थशास्त्र शिक्षण ।

३. पाण्डेय, के० पी०—अर्थशास्त्र शिक्षण ।

४. सिंह, एच० एन० -अर्थशास्त्र शिक्षण ।

५. सिंह, आर० पी० —अर्थशास्त्र शिक्षण ।

६. श्री सत्यदेव —अर्थशास्त्र की रूपरेखा ।

७. तेला व श्रीवास्तव —अर्थशास्त्र के सिद्धान्त ।

★